নন্দীপতি গীতিমালা

—— শ্রী রামদেব ঝা

Scanned by CamScanner

नन्दीपति गीतिमाला

[नन्दीपति पर शोधपूर्ण निबन्ध ओ पाठभेद-टिप्पणी युक्त गीतक संकलन]

प्रोफेसर

श्रीरामदेवझा, एम० ए०

मैथिली विभाग

चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज, दरभङ्गा (बिहार)

मिथिला-रिसर्च-सोसाइटी,

लहेरियासराय,

दरभङ्गा ।

Scanned by CamScanner

NANDIPATI GEETIMĀLĀ

● नन्दीपति गीतिमाला ।

● सर्वाधिकार लेखकक ।

● *प्रकाशक :* मिथिला-रिसर्च-सोसाइटी, दरभङ्गा, लहेरियासराय (बिहार)

● *प्राप्ति स्थान :* नवरत्न गोष्ठी, मिश्रटोला, दरभङ्गा (बिहार)

● *प्रथम संस्करण :* १९६५

● *मूल्य :* सजिल्द—दस टाका मात्र
: अजिल्द - सात टाका मात्र

दरभंगा प्रेस कम्पनी (प्रा०) लि० दरभङ्गा ।

Scanned by CamScanner

आमुख

'नन्दीपति गीतिमाला' प्रस्तुत करैत अत्यन्त हर्ष भऽ रहल अछि यद्यपि बहुत दिन धरि एकर प्रकाशनक प्रतीक्षा करऽ पड़ल। अपना इच्छा छल जे नन्दीपतिक काव्यक साहित्यिक समीक्षा सेहो प्रस्तुत करी, परंच से नहि भऽ सकल। तहिना जखन पोथीक मुद्रण आरम्भ भऽ गेल तकरा पश्चात् नन्दीपतिक बहुत रास अप्रकाशित पद सभ उपलब्ध भेल। जाहिमे चारि गोट गीत परिशिष्टमे देल गेल अछि। शेष सामग्री आब अग्रिमे संस्करणमे (जँ संभव भेल तँ) जा सकत। परिशिष्टक पहिल दुइ गीत मे क्रमशः विष्णुसिंह ओ माधवसिंहक नाम छनि। हमर सम्भावना छल जे नन्दीपति विष्णुसिंह ओ नरेन्द्रसिंहक विशुद्ध सम-कालीन छलाह से एहिसँ पुष्ट होइछ। कविवर निधिक नाम सँ लिखित एक गीतमे सेहो विष्णु सिंहक नाम छनि। हमरा मतेँ ओ गीत नन्दीपतिक होनि से सम्भव। कारण हुनक एक नाम 'कलानिधि' से हो छलनि। कविवर निधिक दुइ गोट लगनी और उपलब्ध भेल अछि। लगनीक भाषा उपर्युक्त विष्णुसिंह-नामांकित पदक भाषासँ भिन्न; नवीन आ तरल अछि। यदि 'निधि' नामक कवि कोनो भिन्न व्यक्ति होयताहो तँ ओ 'लगनी'क कवि होयताह। परिशिष्टमे ओहो दुनू लगनी दऽ देबाक विचार छल, मुदा से सम्भव नहि भऽ सकल।

'बादरि कृष्ण'क भनिताक दुइ गोट 'गौरी पूजा' विषयक गीत उपलब्ध भेल अछि जे परिशिष्टमे दऽ देल गेल अछि। 'गीतिमाला'क प्रथम गीत सेहो गौरी पूजा विषयक अछि। द्वादश नामान्वित नन्दीपतिक एकटा नाम 'बादरि कृष्ण' ('बादरि' तँ नाम छन्हिएँ) सेहो रहल होयतनि,से मानबामे कोनो असौकर्य नहि बूझि पड़ैछ।

स्व० धरेश्वरझाक गीतक पोथीसँ 'चलली मधुपुर साजि रे' तथा स्व० दिनकरदत्तमिश्रक गीतक पोथीसँ 'माधव ई नहि उचित विचार' नामक गीत नन्दीपतिक थिकनि तकर पुष्टि होइत अछि।

जनिकर जाहि सामग्रीक जाहि ठाम उपयोग कयलियनि अछि तनिक यथा स्थान उल्लेख कऽ देलियनि अछि। हुनका सबहिक हम आभारी छियनि। परिचय-लेखनमे श्रद्धेय श्रीरमानाथ बाबूक बहुमूल्य मार्गदर्शन भेटल अछि। श्रद्धेय श्रीसुमनजी एकरा पढ़ि स्थल-स्थलपर जे विचार देलनि से अन्यथा दुर्लभ होइत। आदरणीय डा० श्रीशैलेन्द्र मोहनझाजी गीतक दुर्लभ हस्तलेख प्रदान कऽ एहि पुस्तककेँ निश्चय मूल्यवान् बना देलनि अछि। अन्ततः श्रद्धेय प्राचार्य डा० श्रीलक्ष्मीकान्तमिश्र ओ श्रद्धेय डा० श्रीपूर्णानन्ददासक सहृदयता, उत्साहवर्द्धन ओ सौविध्यदानक अभाव मे कथमपि ई पुस्तक प्रकाशमे अयबाक सुअवसर नहि पाबि सकैत। एहि गुरु वर्गक प्रति हम अपन हार्दिक श्रद्धा अर्पित करैत छियनि।

१२ जून '६५
कबिलपुर,
लहेरियासराय,
दरभङ्गा

श्रीरामदेवझा

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

नन्दीपति

नन्दीपति गीतिमाला

परिशिष्ट

Scanned by CamScanner

नन्दीपति

विद्यापतिक परवर्ती मैथिली कविमे नन्दीपतिक स्थान महत्त्वपूर्ण छनि। रचनामे कोमल भाव ओ कोमल शब्दावली हिनक विशेषता मानल जाइत छनि। काव्य-जगतमे मनबोध नवीनताक श्रीगणेश कयलनि, किन्तु नन्दीपति प्राचीनताक अनेक अंशमे रक्षा करैत नाटकक क्षेत्रमे विषय, भाषा, छन्द ओ लयमे नवीनता अनलनि। अतः हिनक स्थान उमापति, रमापति ओ मनबोधक समकक्ष अछि।

रचना

मैथिलीमे नन्दीपति नाटककार ओ गीतकार दुहू रूपमे प्रसिद्ध छथि। हिनक दुइ गोट नाटक कहल जाइत छनि 'कृष्ण केलिमाला' ओ 'कदम्ब केलि-माला'।[1] हमर अपन अनुमान अछि जे हिनक एकटा नाटक रुक्मिणी स्वयंवर वा रुक्मिणी हरण वा एही विषयसँ सम्बद्ध अवश्य होयतनि। तदर्थ आधार अछि। प्रस्तुत संकलनक प्रथम गीत गौरीपूजा विषयक अछि। एहिमे गोमती तटमे स्थित फुलवाड़ीमे फूल तोड़ि रुक्मिणी द्वारा गिरिजा पूजनक वर्णन अछि। ई सिद्ध करैछ जे ई स्वतन्त्र गीत नहि भऽ कऽ कोनो नाटकक थीक। ओ नाटक रुक्मिणी-परिणय विषयक होयत।

एहिमे, कृष्ण केलि मालाक अनेको खण्डित प्रति मिथिलामे विभिन्न स्थानमे सुरक्षित अछि।[2] ताहिमे सँ किछु प्रतिक आधारपर डा० जयकान्तमिश्र सम्पादन कऽ एकरा प्रकाशित करौलनि अछि। यद्यपि ईहो अपूर्णे छैक।[3]

'कदम्ब केलिमाला' ओ रुक्मिणी - परिणय विषयक नाटकक ग्रन्थ सर्वथा अनुपलब्धे अछि। सम्भव थिक जे वर्तमान संकलनक १५ ओ १६ संख्यक गीत 'कदम्ब केलिमाला'क हो।

एहिसँ भिन्न विभिन्न छन्दमूलक मुक्तगीत सभ जन समाजमे प्रचलित छनि[4] जकर यथा सम्भव संकलन एतऽ प्रस्तुत अछि। यद्यपि एहि संकलनमे कतिपय गीत एहनो अछि जे हुनक नाटकोमे छनि किन्तु अति प्रचलन ओ पाठ भेदक दृष्टिये ओकरो संकलित कयल गेल अछि।[5]

परिचय

परिचयक सम्बन्धमे अन्य मैथिली कवि जकाँ अनिश्चयात्मकता नहि छनि। ओ स्वयं अपन वंशक

१. History of Tirhut-Page 204
आर्यावर्त, २८-१२-१९६०

२. History of Maithili Literature, Vol. I Page 322

३. प्रकाशक—अ० भा० मैथिली साहित्य समिति, तीरभुक्ति, इलाहाबाद-२

४. HML Vol I Page 419, 421-23

५. देखू आगाँ गीत संख्या १७-२१

Scanned by CamScanner

पूर्ण परिचय दऽ गेल छथि। कृष्ण केलिमालाक प्रस्तावनामे सूत्रधारक मुहसँ कवि-वंशावलीक वर्णन कराओल गेल अछि। ओहिमे कहल गेल अछि जे पुंगौली मूलक बढ़ियाम शाखाक सिद्धपुरुष शिवदत्त झाक वंशज सुकवि कृष्णपतिक तेसर पुत्र छलाह। शिवदत्तसँ आरम्भ कऽ नन्दीपति धरिक विस्तृत वंशावली कृष्ण केलिमालामे छैक।[६] नन्दीपतिक परिचयमे थोड़ेक भ्रांति आबि गेल अछि। पण्डित रमानाथ झाजी हिनक परिचय दैत लिखने छलाह जे ई कृष्णपतिक पुत्र, हरिपतिक पौत्र, रघुपतिक प्रपौत्र सुधापतिक वृद्धप्रपौत्र ओ शिवदत्तक अतिवृद्धप्रपौत्र छलाह।[७] किन्तु डा० श्रीजयकान्तमिश्र हरिपति ओ कृष्णपतिकेँ भाइ मानलनि अछि।[८] अतः नन्दीपति स्वयं जे कहलनि तकरा क्रमपर विचार करब आवश्यक अछि। हुनक क्रम अछि सिद्धपुरुष शिवदत्त झा→'ताहि वंशमे' सुधापति→केशव ओ रघुपति→हिनक चारि पुत्र—१ गंगाधर २ जयराम ३ हरिपति ४........। चारिम नाम विवादास्पद अछि। जयकान्त बाबू चारिम कृष्णपति मानैत छथि। किन्तु कवि स्वयं चारिमक नाम 'स्याम' कहलथिन अछि जाहि दिस डाक्टर साहेबक ध्यान नहि गेलनि आ तेँ वंश वृक्षो बनयबाक बेरमे 'स्याम'क उपेक्षा कऽ-कऽ कृष्णपतिएकेँ 'स्याम'क स्थानमे राखि देलथिन जाहिसँ नन्दीपतिक समय एक पीढ़ी आर ऊपर चल गेल। कविक मूल-पंक्ति देखने अधिक स्पष्टता आबि सकैछ—

केशव रघुपति नाम तसु एक-एक तह एक।
रघुपतिझाकाँ चारि सुत गंगाधर[१] जयराम[२] ॥
सुरगुरु सम हरिपति[३] सुधी अति सुबुद्धि सहस्याम[४]
हरिपति हरि अवतार तसु गुरु ठाकुर गुणवृद्ध।
पण्डित गोकुलनाथझा शिष्य जनिक परसिद्ध ॥
सुकवि कृष्णपति तसु तनय तन्हिकाँ चारि कुमार ॥[९]

हमरा जनैत रघुपतिक चारू पुत्रक नाम गना कऽ ओहिमे अपन पितामह हरिपतिक गुणकीर्त्तन कऽ अपन पिता कृष्णपतिकेँ हुनक पुत्र होयबाक निर्देश करैत छथि। पञ्जीमे वस्तुतः श्यामक उल्लेख अछि आ हुनका महामहोपाध्याय कहल गेल छनि। हरिपति ओ हुनक पुत्र कृष्णपतियो केँ महामहोपाध्याय कहल गेल छनि। कृष्णपति महाराज शुभङ्कर ठाकुरक दौहित्री-पुत्र छलाह। नन्दीपतिक सय वर्ष पाछाँक लिखल पञ्जीसँ पता चलैछ जे कृष्णपतिक तीन विवाह छलनि, प्रथम पत्नीक लक्ष्मण, द्वितीयाक नन्दीपति ओ तृतीयाक सर्वजान गरीब नामक बालक छलथिन। नन्दीपतिकेँ एकटा कन्यामात्र छलथिन जनिक विवाह संकराढ़ी मूलक कवि नकटूसँ भेल छलनि।[१०]

किन्तु किछु अंशमे पञ्जीक संग कविक विवरणमे सामञ्जस्य नहि बूझि पड़ैत अछि। पहिल भेद पड़ैत अछि नाममे, हरिपतिकेँ पञ्जीमे हरपति कहल गेल छनि। हरपतिक पिताकेँ रघुपति नहि कहि 'माङ्गू' कहल गेल छनि। कृष्ण-केलिमालाक मतेँ कृष्णपतिक चारिटा पुत्र चतुर चन्द्रपति, अतिसर्व्वज्ञ उदार हेमपति, कवि नन्दोपति, तथा शिवभगत लक्ष्मीपति।[११] किछु पञ्जीमे तीनिए पुत्रक नाम छनि, ताहूमे नन्दीएपतिक नाममे साम्य छनि। शेष दू नाममे भिन्नता छैक। संभव थीक जे सर्व्वज्ञ हेमपतिकेँ पञ्जीमे 'सर्वजान गरीबः' कहल गेल होनि तथा लक्ष्मीपतिकेँ लक्ष्मण।

६. कृ. के. मा. पृ. ७–८

७. मैथिली पद्य संग्रह पृ. ३५

८. HML Vol I, Page 322
तथा कृ. के. मा. Introduction पृ. २

९. कृ. के. मा. पृ. ७–८

१०. ई पञ्जी सम्बन्धी समस्त सूचना देलनि प्रोफेसर श्रीरमानाथझा, अध्यक्ष, मैथिली विभाग, सी. एम. कालेज, दरभंगा।

११. देखू कृ. के. मा. पृ. ८
चतुर चन्द्रपति हेमपति अति सर्व्वज्ञ उदार
नन्दीपति कवि शिवभगत लक्ष्मीपति तसु छोट

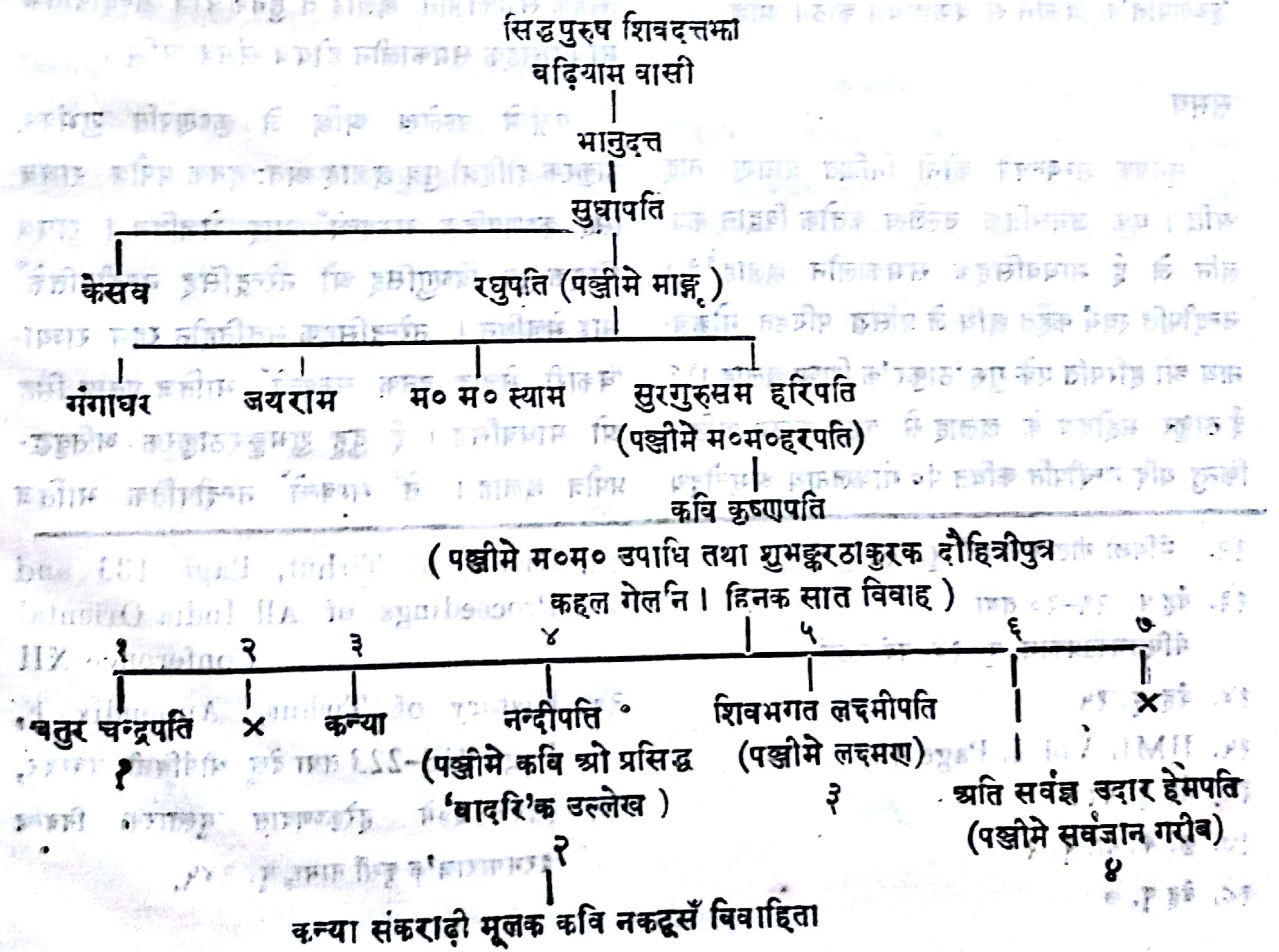
Scanned by CamScanner

किन्तु १६४२ शाके (१७२० ई०)मे लिखल गेल एक पञ्जी-ग्रन्थसँ किछु और सूचना प्राप्त होइत अछि। ओहिमे कृष्णपतिक सातगोट विवाहक उल्लेख अछि तथा चारि पुत्र ओ एक कन्या (सभ वैमात्रेय)क उल्लेख भेटैछ। ओहिमे लक्ष्मण, नन्दीपति ओ गरीबक अतिरिक्त चन्द्रपतिक सेहो उल्लेख अछि। किन्तु एहिमे हिनका लोकनिक नाममे कोनो विशेषण नहि छनि। सभसँ महत्त्वपूर्ण बात अछि जे एहि पञ्जी-ग्रन्थमे नन्दीपतिक विवाहक चर्च एकदम नहि छनि जखन कि गरीबक विवाहक चर्चा छनि।

एकटा और महत्त्वपूर्ण बातक सम्बन्धमे भ्रान्ति अछि। नन्दीपति कृष्ण-केलिमालामे अपन परिचय आरम्भ करैत कहैत छथि—

सिद्धपुरुष शिवदत्तझा वास जनिक बढ़ियाम·····
····ताहि वंशमे अवतरल सगुन सुधापति मेल ॥

एहि आधारपर उपर्युक्त दुहू विद्वान् मानलनि जे शिवदत्तक पुत्र सुधापति छलाह। किन्तु यदि सुधापति शिवदत्तक पुत्र छलथिन तँ सोझे नहि कहि 'ताहि वंशमे' कहबाक कोन प्रयोजन छलैन? हमरा सन्देह भेल छल जे शिवदत्त ओ सुधापतिक बीचमे किछु कड़ी छूटल ने होइक जकर स्मरण कविकेँ नहि ने रहल होनि। १६४२ शाकेवला पञ्जी-ग्रन्थसँ सन्देह सत्य सिद्ध भेल। तदनुसार वस्तुतः सुधापति छलाह भानुदत्तक पुत्र ओ शिवदत्तक पौत्र। सुधापतिकेँ शिवदत्तक पुत्र मानब, अनर्गल अछि। अतः कवि प्रयुक्त 'ताहि वंशमे' सार्थक अछि। निम्नलिखित रूपमे कविक वंशावली होयतनि—



हिनक वंशावलीमे विशेषण सभकेँ देखला उत्तर बूझि पड़ैछ जे हिनक वंश बड़ विशिष्ट छलनि। अपन पिता कृष्णपतिकेँ 'सुकवि' विशेषणसँ अभिहित कयने छथि। अतः नन्दीपतिक काव्य-प्रतिभा पैतृक देन छलनि। एहि सुकवि कृष्णपतिक दुइ गोट पद कहल जाइत छनि; एक श्रृङ्गार रसक विरह वर्णनक पद[१२], दोसर दरबारी कान्हरा रागमे तारा वन्दना विषयक पद।[१३] यद्यपि दोसर पदमे उमापतियोक भनिता पाओल जाइछ।[१४] किछु ठाम भनितामे सोझे 'कृष्ण कवि' भेटैछ।[१५] 'रुक्मिणी हरण नाटक'क रचयिता रमापति सेहो अपन पिताक नाम 'कवि कृष्णपति' कहने छथि।[१६] उपर्युक्त गीत कोन 'कृष्णपति'क थिकनि से बेकछायब कठिन अछि।

समय

समयक सम्बन्धमे कोनो निश्चित प्रमाण नहि अछि। एक जनश्रुतिक उल्लेख कतोक विद्वान् कयलनि जे ई माधवसिंहक समकालीन छलाह[१७]। नन्दीपति स्वयं कहैत छथि जे प्रसिद्ध पण्डित गोकुलनाथ ओ हरिपति एके गुरु 'ठाकुर'क शिष्य छलाह।[१८] ई ठाकुर महोदय के छलाह से कहब कठिन अछि। किन्तु यदि नन्दीपति कथित पं० गोकुलनाथ अमृतोदय नाटक, कुण्डकादम्बरी, शिवस्तुति आदि ग्रन्थ-प्रणेता मंगरौनीक फन्नावार वंशीय म० म०गोकुलनाथ उपाध्याय होथि (सैह होयताहे, कारण तेँ नन्दीपति विशेष रूपेँ उल्लेख कयलथिन अछि) तँ नन्दीपतिक समयक अनुमान कयल जा सकैछ। गोकुलनाथ महाराज राघवसिंहक समकालीन छलाह।[१९] राघवसिंहक समय १७०१ ई० सँ १७३९ ई० मानल जाइछ। राघवसिंहक बाद जे लोकनि क्रमसँ राज्यासीन भेलाह से छथि—विष्णुसिंह (१९३९–४३)→ नरेन्द्रसिंह(१७४३-७०)→नरेन्द्रसिंहक विधवापत्नी रानी पद्मावती (१७७०-७८)→प्रतापसिंह (१७७८-८५)→ माधवसिंह (१७८५-१८०७)।[२०] यदि हरिपति राघवसिंहक समकालीन छलाह तँ हुनक पौत्र नन्दीपतिक माधवसिंहक समकालीन होयब संभव अछि।

पञ्जीमे उल्लेख अछि जे कृष्णपति शुभंकर ठाकुरक दौहित्री पुत्र छलाह अतः हुनक प्रपौत्र राघव सिंह कृष्णपतिक सम्बन्धेँ भाइ भेलथिन। राघव सिंहक पुत्र विष्णुसिंह ओ नरेन्द्रसिंह नन्दीपतिकेँ भाइ भेलथिन। नरेन्द्रसिंहक संततिहीन रहने राज्याधिकारी भेलाह हुनक सम्बन्धेँ भातिज प्रताप सिंह ओ माधवसिंह। ई दुहू शुभङ्करठाकुरक अतिवृद्ध-प्रपौत्र छलाह। तेँ सम्बन्धेँ नन्दीपतिक भातिज

---

१२. मैथिली गीत रत्नावली पृ. २९

१३. वैह पृ. २९–३० तथा
मैथिलभक्तप्रकाश, पृ. १४, पद २८म

१४. वैह पृ. १५

१५. HML Vol. I, Page 427

१६. वैह पृ. ३११

१७. कृ. के. मा. पृ. २

१८, वैह पृ. ७

१९. History of Tirhut, Page 133 and Proceedings of All India Oriental Conference XII

२०. History of Tirhut, Appendix F, Page 218–223 तथा देखू श्रीमैथिली, नवम्बर, १९२५ इ०मे हरेकृष्णदास मुख्तारक निबन्ध 'दरभंगाराज'क कुर्सी नामा, पृ. २४५.

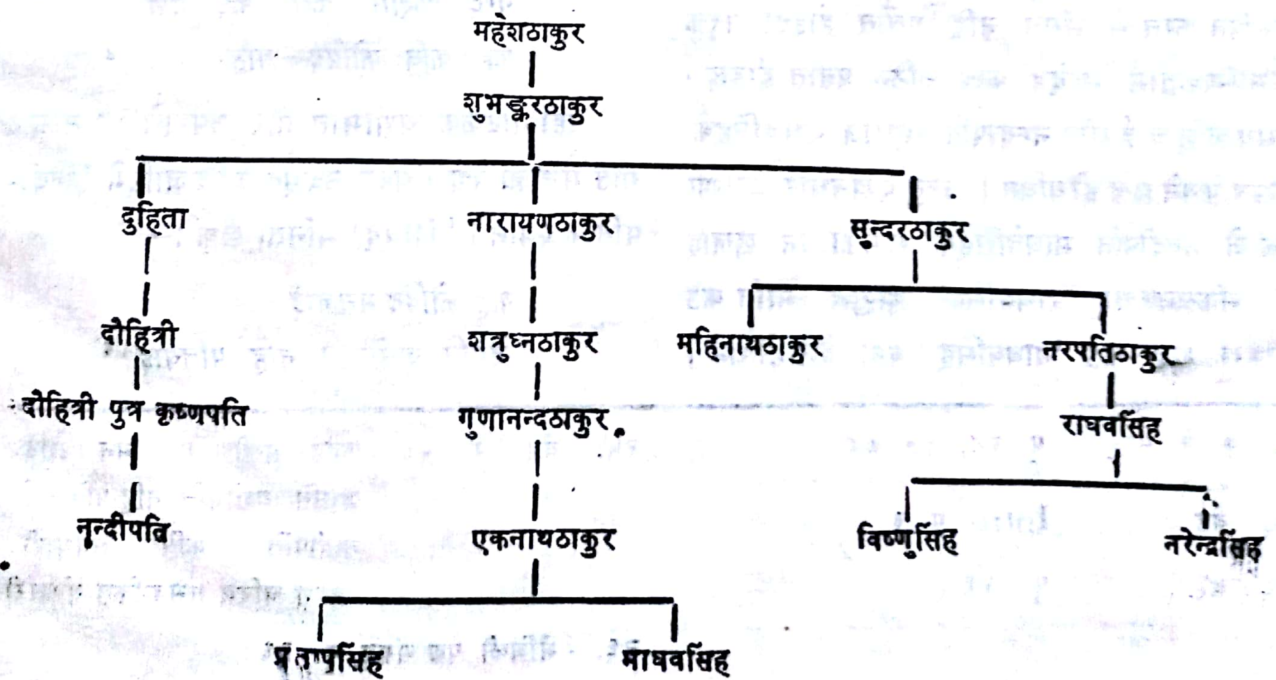
छलथिन।[२१] अतः धारणा बनैछ जे नन्दीपति विशुद्ध रूपेँ विष्णुसिंह ओ नरेन्द्रसिंहक समकालीन रहल होयताह। प्रतापसिंह ओ माधवसिंहक समय मे अत्यन्त जरातुल अवस्थामे रहल होथि से संभव अछि। अतः अठारहम शताब्दीक मध्यमे हिनक समय निश्चित होइत अछि।

एहि सम्बन्धमे एक और महत्त्वपूर्ण तथ्यपर विचार करब आवश्यक अछि। उपर हम १६४२ शाके (१७२० ई०)क एक पञ्जी-ग्रन्थक उल्लेख कयलहुँ अछि जाहिमे नन्दीपतिक वैमात्रेय गरीबक विवाहक चर्च छनि, किन्तु नन्दीपतिक नामोल्लेख अछैतो विवाहक चर्चा नहि छनि। ई अनुमान कऽ सकैत छी जे हुनक विवाह नहि भेल छलनि। ओ किशोरावस्थामे छल होयताह। तेँ परवर्ती पञ्जीग्रन्थ जकाँ कवि उपाधि वा 'बादरि' उपनामक चर्चा नहि छनि। आनो भाइ सभ नवयुवके रहल होयथिन तेँ हुनको लोकनिक कोनो विशेषणक अनुल्लेख स्वभाविके।

दस सँ बीस वर्षक भीतरेमे सम्भव हुनक वयस रहल होयतनि। यदि हम मानि ली जे उपर्युक्त पञ्जी-ग्रन्थक लेखन काल १६४२ शाके मे नन्दीपतिक वयस पन्द्रह वर्ष छलनि तँ हुनक जन्म काल १६२७ शाकेक लगपासमे पड़ैत छनि अर्थात् १७०५ ई०क लगपासमे जन्म भेल होयतनि। एहि हिसाबेँ नरेन्द्रसिंहक राज्यारोहण कालमे हुनक वयस ३७-३८ वर्षक रहल होयतनि। अतः उपर्युक्त स्थापना जे ओ विष्णुसिंह ओ नरेन्द्रसिंहक समकालीन छलाह से एहू तरहेँ समर्थित होइत अछि।

नन्दीपति अवश्ये दीर्घ जीवी व्यक्ति छल होयताह। अपन जीवन कालमे राघवसिंहक राजत्वक उत्तर भाग, विष्णुसिंह, नरेन्द्रसिंह, पद्मावती

२१. समानान्तर वंशावलीसँ स्पष्ट होइछ—



प्रतापसिंह, ओ माधवसिंहक राजत्वक पूर्व भाग देखने होयताह। माधवसिंहक राज्यारोहण कालमे हुनक वयस ७०–८० वर्षक छल होयतनि।

पुत्रक अभावमे जीवनसँ विरक्ति जकाँ छल होयतनि ते राज्याश्रयकेँ बेसी महत्त्व नहि देने होयथिन। तेँ हुहक रचनामे कोनो राजाक उल्लेख नहि छनि। संकलनक १२ संख्यक गीतमे 'माधवसिंह'क उल्लेख भेटैछ। किन्तु अधिकांश स्थलमे ई पद भनिता हीने भेटैछ। गीत थिकैक श्रृंगार रसक। दीप लेसि आँचरसँ झाँपि केलिगृह दिस जाइत नायिकाकक सौन्दर्य-वर्णन छैक। दीपक रासि कम्पायमान छैक ताहिपर कवि उत्प्रेक्षा कयलनि अछि जे उन्नत सुन्दर उरोज देखि कऽ ओ टेम माथ धुनैत अछि जे चतुरानन विनु हाथक जन्म किएक देलनि। ७०-८० वर्षक बूढ़ एहन श्रृंगारक वर्णन करत आ ओ गीत सम्बन्धेँ भातिज (श्रीरमानाथ बाबू कहलनि जे एक अन्य सम्बधेँ माधवसिंह नन्दीपतिक भागिनो छलथिन)केँ सर्मपित करत से संगत नहि प्रतीत होइतो पदक प्रामाणिकतामे सन्देह करब कठिन प्रतीत होइछ। संभव अछि जे ई गीत नन्दीपति महाराज राघवसिंहकेँ अर्पित कयने छल होयथिन। किन्तु एखनधरि धारणा छल जे नन्दीपति माधवसिंहक समकालीन छलाह तेँ संकलनकर्त्ता 'राघवसिंह' अशुद्ध मानि कऽ ओकरा शुद्ध कऽ 'माधवसिंह' बना देने होथिन। सम्भव अछि अनुसन्धान कयला पर हुनक राज्यश्रय-उल्लेख-युक्त रचना उपलब्ध होअय।

नाम ओ उपनाम

अपना नाटिकाक प्रत्येक अङ्कक अन्तमे ओ अपनाकेँ 'द्वादश नामान्वित महाकवि नन्दीपति' कहैत छथि।[२२] नन्दीपति नामेँ प्रसिद्ध छलाहे, किन्तु अन्य एगारह टा नाममे किछुएक उल्लेख भेटैछ। अपना नाममे भाषाकवि, कवि ओ महाकवि आदि विशेषणक कतोक ठाम प्रयोग कयने छथि तेँ संभव अछि जे 'कवि' नामेँ प्रसिद्ध रहल होथि। पंजीयोमे हिनका नाममे 'कवि' विशेषणक प्रयोग अछि। एहिसँ अतिरिक्त तीन गोट उपनामक प्रयोग हिनक नाटकेमे भेटैछ। ओ तीनू अछि 'कलानिधि', 'कोविद' ओ 'बादरि'। डा० जयकान्त मिश्र केवल बादरि ओ कलानिधिए उपनामक चर्च कयने छथि[२३] किन्तु 'कृष्णकेलिमाला'क एक गीतमे भनिता अछि :—

नन्द किशोर कोर कए लेल
कह कवि कोविद बाहर भेल[२४]

एही नाटकक 'यशोमति मोर उपरागे'[२५] नामक गीत मैथिली पद्य संग्रहमे उद्धृत अछि जाहिमे 'नन्दीपति'क स्थानमे 'कोविद' भनिता छैक :—

कह कोविद मनलाई
जननि जसोमति नहि पतियाई[२६]

---

२२. कृ. के. मा., पृ. २८, ३७, ७४

२३. वैह Intro पृ. ३

२४. वैह पृ. २१

२५. वैह पृ. २६ कहहु सखी गण मन लाई
जननि यशोमति नहि पतिआई
नन्दीपति कवि अवधारी
कृष्ण चरित्र सभ छकित गोआरी

२६. मैथिली पद्य संग्रह, पृ. ३६

Scanned by CamScanner

अतः हुनक एक उपनाम 'कोविद' छलनि से निस्सन्देह। एही नामक भनिता युक्त एकटा गीत एहि संकलनोमे ३ संख्यक अछि।

नाटकक तेसर अंकमे 'कवि कलानिधि' उपनामक भनिता युक्त एकटा गीत अछि। यद्यपि संगहि हुनक यथार्थो नाम अछि :—

भनइ नन्दीपति कविकलानिधि
रुशलि रमनि मिल इहे बड़ सिधि[२७]

कविक सभसँ प्रसिद्ध उपनाम छलनि 'बादरि'। पञ्जीयोमे एहि नामक उल्लेख भेटैछ :—
कृष्णपति सुतः कवि बादरि प्रसिद्ध कवि नन्दीपतिः

'कृष्णकेलिमाला' क तेसर अंकमे 'बादरि' नामसँ एक गीत अछि :—

कह बादरि एहे उतपात
राधा कबूल कएल जगात[२८]

ओही अंकक एक और गीत यद्यपि नाटकमे नन्दीपतिक भनितामे अछि किन्तु लोककण्ठमे ई 'बादरि'क भनितामे प्रचलित अछि[२९]। एहिसँ ई धारणा बनैछ जे हिनका गीतमे एक नामक स्थानमे दोसर नामक प्रयोग होइत छलनि। एहिसँ अतिरिक्त एहि संकलनक कतोक गीतमे 'बादरि' भनिता अछि।[३०] कविशेखर बदरीनाथझा बादरिक भनिता युक्त एकटा गीत निधि उपाध्यायक गीतक संग देने छथि।[३१] 'निधि'के कोइलखक 'जीरखन झा'क नामान्तर मानैत छथि वा उजानक बदरीनाथ उपाध्यायक पूर्वज 'निधि' छलाह सेहो संभावना कयल गेल अछि।[३२] बादरिक प्रसंग ओ कहैत छथि जे 'यदि बादरि नन्दीपतिक नामान्तर छलनि, 'निधि'क नहि, तखन एतए उल्लेख प्रामादिक बुझक चाही।[३३] हमरा जनैत तँ एहिमे 'यदि' लगयबाक कोनो प्रश्ने नै छैक। बादरि नन्दीपतिएक नामान्तर थिकनि। आ तेँ ओ गीत एहि संकलनमे (८ संख्यक) राखल गेल अछि। ईहो स्मरण राखक चाही जे नन्दीपतिक बारह टा नाम छलनि जाहिमे एकटा कलानिधि सेहो थिकनि। संभव अछि जे 'निधि' कलानिधिक संक्षिप्त रूप हो। 'निधि' भनितावाला गीत उद्धृत कऽ देब अनुचित नहि होयत। दोसर गीतमे विष्णु सिंहक नाम छनि। ऊपर देखा चुकल छी जे नन्दीपति विशुद्ध रूपेँ विष्णु सिंह ओ नरेन्द्र सिंहक समकालीन रहल होयताह।

(१)

कनक लता सन तनुवर धनिआँ चिकुर रचल जलधर विनु पनिआँ,
चाहए राहु गरासए विनु दोषेँ छाड़ए रे की।
अमल कमल-दल सरस नयनमा, चातक शुक पिक मधुर बएनमा,
नहि कुचभार सम्हारए वेरि वेरि लचकए रे की।

---

२७. कृ. के. मा. पृ. ६१
२८. वैह पृ. ४५
२९. देखू गीत संख्या, १९
३०. देखू गीत संख्या, ४, ५, ८,
३१. मै. गी. र. पृ. ३२, पद ५६
३२. वैह पृ. १२५
३३. वैह पृ. १२५

Scanned by CamScanner

मदन वेदन तन कोमल धनिश्राँ, नाकहि वेसरि पहिरु। झुलनिश्राँ,
लगइछ मदन महीपति फाँसिहु लटकल रे की।
कविवर 'निधि' भन सुनहु सजनमा, आए मिलत मन जनु करि खिनमा,
सफल कला परि पूरलि मनहुक जूड़लि रे की।[३४]

(२)

प्रेयसि न करिश्र प्रेम मलान।
सब तँह सार समय मधुयामिनि कामिनि परिहरु मान।
मनसिज मरम सताब सबहु खन छन छन हरए गेश्रान॥
नयन चाष तुल, नासा तिलफुल, नीरज वदन विराज।
कटि केहरि सन अनुखन हर मन नहि दुर करह वेश्राज॥
सामर चिकुर कपोल सोहाश्रोन अधर चिबुक अभिराम।
जनि मनमथ निश्रकर कुच विरचल कनककमल अनुपाम॥
कोकिल विकल वचन तुश्र सुनि सुनि गति लखि विकल मतङ्ग।
विकसित वदन रदन अनुमाविश्र जनि शशि दामिनि सङ्ग॥
विष्णु सिंह नृप रसबुझु मैथिल-नबशिरमनि वश भेल।
'निधि' निरधन जनि मिलल महगमनि हसि परि रम्भए भेल॥[३५]

प्रस्तुत संकलन : गीतिमाला

उपरि वर्णित तीनू-चारू भनिता सँ युत गीतक विभिन्न पाठान्तरक संग संकलन एहि ठाम कयल गेल अछि। पदक प्रामाणिकताक प्रसंग भनिते मात्र प्रमाण कहल जा सकैछ। नन्दीपतिक अनेक गीत विद्यापतिक नामपर खूब प्रसिद्ध छनि। आब तँ कतोक प्रमाण सँ सिद्ध भऽ गेल अछि जे विद्यापतिक नाम-पर अनेको कविक गीत मिज्झड़ भऽ गेल छनि। हमर धारणा अछि जे यदि कोनो गीत विद्यापतिक नामपर चलैत छनि आ आनो कविक नामपर चलैत छनि तँ ओ गीत विद्यापतिक नहि भऽ आने कविक होयतनि।

'माननि आब उचित नहि मान' ओ 'माधव ई नहि उचित विचार' नामक प्रसिद्ध गीतक सम्बन्धमे क्यौ सोचियो ने सकैछ जे ओ विद्यापतिक नहि अपितु नन्दीपतिक थिकनि। मुदा ई थिकैक यथार्थ। पहिल गीत मिथिला-गीत-संग्रहमे नन्दी-पतिक भनितामे अछि संगहि येह गीत कृष्णकेलिमाला नाटकोमे छैक।[३६] दोसर गीतपर प्रथमे बेर दावा कयल गेल अछि। एकर आधारक उल्लेख गीतक टिप्पणी मे कयलो गेल अछि।

एक बात और। एके तुक मे समस्त गीत सम्पन्न करबाक परिपाटी विद्यापतिक नहि छवि। एहन

३४. वैह पृ. ३१-३२
३५. वैह पृ. ३२-३३
३६. देखू गीत संख्या १८
३७. देखू गीत संख्या १०

गीत विद्यापतिक होयब कम संभव, किन्तु नन्दीपतिक गीतमे ई परिपाटी वर्तमान छनि।

अधिक गीतक प्रामाणिकता तँ निर्विवादे छनि, किन्तु किछु गीत विवादास्पद छनि। जाहिमे दुइ गीत मे क्रमशः बुद्धिनाथ (लाल)[३८] ओ गौरीपतिक[३९] भनिता भेटल अछि मुदा जे बेसी पाठमे 'नन्दीपति'ए भनिता भेटल तेँ हम ओकरा नन्दीपतिक गीत-रूपमे ग्रहण कयल। स्मरण राखक थीक जे ओ द्वादश-नामान्वित छलाह। अतः संभव अछि जे नन्दीपति बुद्धिनाथ (लाल), गौरीपति ओ निधियोक [४०] नाम सँ गीत रचना कयने होथि। ऊपर देखल गेल अछि जे हुनक प्रामाणिक नाम बादरि ओ नन्दीपति सेहो, एक दोसराक स्थानमे स्थानान्तरित भेल अछि। ते उपर्युक्त धारणा निराधार नहि अछि।

संकलनक अन्तमे जनसाधारणमे प्रचलित हुनक नाटकक गीत सेहो देल गेल अछि। एहिसँ गीतक लोकप्रियता सूचित होइछ संगहि विभिन्न पाठान्तर उपयोगी सिद्ध भऽ सकैछ।

हुनक एतबे गीत नहि, औरो रहल होयतनि। बारह नामसँ लिखनिहार कवि एतबे गीत लीखि कऽ नहि छोड़ने होयताह। काव्य-सर्जनामे अवश्य अमित सामर्थ्य रहल होयतनि। अतः हुनक अन्य रचना ओ जन-प्रचलित गीतक संकलन मनोयोग पूर्वक करबाक आवश्यता अछि।

---

३८. देखू गीत संख्या ७

३९. देखू गीत संख्या ८

४०. निधिक कवितामे विष्णुसिंहक उल्लेख अछि। ऊपर देखल अछि नन्दीपति विष्णुसिंह ओ नरेन्द्रसिंहक सम्बन्धेँ भाइ ओ समकालीन छलथिन। नन्दी-पतिक बारह गोट नाम छलनि। एक गोट नाम छलनि 'कलानिधि' तकरे संक्षिप्त रूप 'निधि' नामे सेहो काव्य रचना कयने होथि तँ आश्चर्य नहि। बुद्धि लालक एक गीतमे (मिथिला गीत संग्रह प्रथम भाग, पद संख्या—३२ द्रष्टव्य) राघवसिंहक उल्लेख अछि। राघवसिंह नन्दीपतिक पूर्व अवस्थामे समकालीन छलथिन।

Scanned by CamScanner

नन्दीपति गीतिमाला

१

गौरी-पूजा

गिरिजा पूजय चलु[1] बाला
देथु अभयवर मदन गोपाला[2]
गोमतीक तट[3] लसु[4] फुलवारी
से फुल तोड़थि राजकुमारी
बाटी भरि चानन करपूर[5] तमोल
गौरिहि दय रुक्मिणि[6] कर जोर
पूजिय[7] गिरिजे शुभ यश लेहु
जगन्नाथ स्वामी मोहि देहु
नन्दीपति भन सुनू[8] सेश्रानि[9]
देथु[10] अभयवर सारंग पानि

मि० गी० सं० (भाग–३, गीत–४)

●

---

[१] अन्य पाठ

१. चलु चलु । ४. लसे । ५. कर्पूर । ६. रुक्मिनि । ७. पूजिअ । ८. सुनह ।
९. सयानि । १०. देहु ।

अन्य पाठ सँ

२. 'गोपाल'क स्थान मे 'गोपाला' । ३. 'तीर'क स्थानमे 'तट' ।

Scanned by CamScanner

२

महेशवानी

माला गाँथू हे गौरी
बम्भोला कें[१] पहिरायब[२] माला गाँथू हे गौरी।
नहि घर हम सूत चरखा काटल नहि बाँटल हम डोरी।
पैंच उधार कहाँसँ लायब नहि घर दाम न कौरी।
एक सय[३] आठ रुद्र केर माला सौंसे[४] सर्पक डोरी।
निर्गुण बान्ह गेंठ[५] दस बान्हल नाग फणा केर भूरी।
माला गाँथि कयल तैयारी लय चलु शिवक दुआरी।[८]
पार्वती[९] पति थिकथि दिगम्बर[१०] देखि माल मुसकाइ।
भनहिँ[११] नन्दीपति सुनु ए मनाइनि इहो पद थिक निरवाणी।
जाति-पाति एको नहि हिनका तीन भुवन के दानी।

किशोरी कुमारी, घोघरडीहा

---

[२] विद्यापतिर शिवगीत : पृ० १५–१६, गीत २५ क पाठान्तर
१. के। २. पहिरावन। ३. सौ। ४. सउँसे। ५. बान्ह गेंट। ६. बान्हल। ७. फेँचके। ८. दुयारी। ९. पारवती। १०. थिका शिवशङ्कर। ११. 'भनहिँ विद्यापति।' तथा पाद टिप्पणीमे देल गेल अछि 'भनहिँ नन्दीपति···इति पाठान्तर'।

हमरा अपना मायसँ ई गीत निम्नरूपमे भेटल :—

माला गाँथू हे गौरी
शिवशंकर के पहिराओन माला गाँथू हे गौरी
ने हम चरखा तुर सुत काटल ने हम बाँटल डोरी
किनका घर हम पेंच लय जायब नै अछि दाम ने कौड़ी
एक सय आठ रुद्र (मुंड) के माला सौंसे सर्पक डोरी
निर्गुण ब्रह्मा गेंठ ने देलनि नाग पेँच के भूड़ी
माला गाँथि तैयार हम कैलहुँ लय पहुँचाबथि गौरी
जाति–पाति एको नहि बूझल सगर नगर बुलि ऐली

Scanned by CamScanner

३

उचिती

बड़ उँच हेमत पहाड़ रे
निकसल[1] निरमल धार रे
तनिकहु गंगा नाम रे
जनिक न पाब[2] उपाम रे
पुरुखक एहने[3] वानि रे
[4]सेवल से हम जानि रे
से की होथि कठोर रे[5]
तम नहि करथि उजोर रे
कह कोविद अवधारि रे
सुपुरुख करथि[6] विचारि रे

दाइजी, खोजपुर दरभंगा

[३] पाठान्तर : स्व० महेश्वरठाकुर, भीठ भगवानपुर, दरभंगा।
१. निकसलि। २. पाबिअ। ३. एहन। ४. हुनि सेवल हम। ५. अनेक ठाम सातम आठम पदक अभाव भेटैछ। ६. कहथि।

४

उचिती

हम अबला अज्ञानि रे[१]
ससिक[२] सेवल हम[३] जानि रे
आज हमर बड़ भाग रे
एहन परस मनि पाब रे
डेङि बुरल[५] मझधार रे
लय[६] जहाज करु पार रे
सात खंरुड[७] कुसिआर रे
निकसल[८] प्रेम पिआर रे
कह 'बादरि' अवधारि रे
गुनमन्त जग[९] दुइ चारि रे

बुचनीदाइ, नवानी, दरभंगा

---

[४] मि० गी० सं० (भाग —१, गीत–५२), मि० म० (गीत ८७३)क पाठान्तर :—
१. निरजनि। २. शशि। ३. गुण। ५. डुबल (मि०म० डेङि डुबल)। ६. लै।

विशेष : : के [illegible]ारि पंक्ति, प्रथम, दोसर, पाँचम ओ, छठम समान छैक। तेसर, चारिम तथा अन्तिम चारि पंक्ति नहि छैक। एकरा बदलामे तेसर–चारिमक बदलामे छैक––

हम सों अनेक कुरीति रे
सुपुरुष ने तेजै पिरीति रे

भनिता मे छैक –

भनहि विद्यापति भान रे
सुपुरुष बसथि सुठाम रे

मि० गी० स० (भाग–३, गीत–१४), मि० म० (गीत–६१८) मे एहि गीतक पाँचम छठम भेटैत छैक जाहिमे 'निकसल'क स्थानमे 'निकसय' छैक।

अन्य पाठान्तर

४. उपमा पाहुन पाब रे। ७. रस.खण्डित। ८. निकसय। ९. जन।

Scanned by CamScanner

५

उचिती

जँओं करु सुजन सिनेह रे
उपमा[1] पाहुन नेह रे
हेम कर[2] मण्डप हेम रे
चानन वन कत[3] नीम रे[4]
काग[5] कोइली एक भाँति[6] रे
मेम्ह[7] भमर एक[8] काँति[9] रे
हेम[10] हरदि कत[11] बीच रे
गुनहि चिन्ही[12] उच[13] नीच रे
मनि[14] कादव लपटाए रे
तैंओ ने[15] तकर[16] गुन[17] जाए रे
अलि काँ[18] कुसुम अनेक रे
मालति कैं[19] अलि एक रे[8]
कह 'बादरि' अवधारि[20] रे[21]
सुपुरुष जन दुइ चारि[22] रे

दाइजी, खोजपुर, दरभंगा

---

[५] i मि० गी० सं० (भाग-३, गीत-१३)क पाठान्तर :—
५. काक। ६. कांति। ८. दुइ। ९. भाँति। १०. हिंगु। १२. चिन्हल। १३. उँच। १४. मणि। १६. तनिक। १८. कँ। १९. के।

विशेष : —पाँचम-छठम पंक्ति अन्तिम दुइ पंक्ति सँ पूर्व छैक।

ii H. M. L. (Vol. I 422)क पाठान्तर :— गजहरा-हस्तलेखसँ ई गीत उद्धृत कयल गेल अछि। जाहिमे प्रथम चारि पंक्तिक अभाव छैक।
११. कर। २०. बादरि कवि अवधारी।

iii ग्रियर्सनक पाठान्तर :—
४. प्रथम चारि पंक्तिक स्थानपर निम्नलिखित पंक्ति छैक :—

बड़ जन जकर पीरीति रे
कोपहु न तजय रीति रे

एगारहम-बारहम पंक्ति छैके नहि। २१. भणिता मे विद्यापतिक नामयुक्त निम्नलिखित दुइ पंक्ति छैक—

विद्यापति अवधान रे
सुपुरुष न कर निदान रे

शेष छो पंक्तिक पाठान्तर निम्नलिखित अछि—
५. काक। ६. जाति। ७. भेम। ९. भाँति। १२. बुझिअ। १३. ऊच। १५. तैँ कि। १६. तनिक।

६

उचिती

प्रथम समागम भेल रे
हठहि रइनि[1] बिति[2] गेल रे
नव तन[3] नव अनुराग रे
बिनु परिचय[4] रस जाग[5] रे
से सभ[6] पिय[7] तजि गेल रे
जौवन[8] उपगत भेल रे
आब[9] ने जिउब[10] बिनु कन्त रे
बिरहे जीबक[11] अन्त रे
नन्दीपति कवि भान रे[12]
सुपुरुष ने करय निदान रे[13]

मिथिला देवी, उसमा मठ, दरभंगा



मन्तव्य :—ग्रियसनक पद संख्या-४२ क अनुसरण करैत नगेन्द्रनाथगुप्त एहि पदकेँ विद्यापतिक पद मानि ५०८ संख्यक पद रूपमे रखलनि। श्रीविमान विहारी मजुमदार 'मैथिल-पोथी सँ प्राप्त पद' खण्डक अन्तर्गत उपर्युक्त दुहू महानुभावक अनुसरण करैत अविकल रूपमे एहि पदकेँ पद संख्या ४६५ मे स्थान देलनि।

iv अन्य पाठ :—

१. अनुपम। २. हेमहि। ३. की। १९. काँ। २२. सुपुरुष करथि बिचारि रे।

[६] i. मि० गी० स० (भाग-३, गीत-२६)क पाठान्तर :—

१. रैनि। २. वीति। ३. तव तन। ४. परिच। ६. से सभ संग। ७. पिये।
८. यौवन। ११. आब की जीवन भेल।

ii. मै० लो० गी० (पृ० २५७)क पाठान्तर :—

१. रैनि। ६. से सब संग। ८. यौवन। ११. आब की जीवन भेल।

iii. ग्रियर्सन (पद संख्या-७१)क पाठान्तर :—

माँग सैसव पहु अब जीयब विरहे जीव भेल
भनइ विद्यापति भान रे सुपुरुख गुनक निधान रे

नगेन्द्रनाथ गुप्त पदसंख्या ६६३ मे तथा विमान विहारी मजुमदार पद संख्या ५०६ मे एकरा विद्यापतिक नाम पर रखने छथि।

Scanned by CamScanner

७

तिरहुति

सुन्दरि चललि शयन गृहि ना[1]
दश पाँच[2] सखि सब कर धरु ना
जइतहि लागु परम[3] डर ना
जैसे शशि कांप[4] राहु डर ना
हार टुटिय छिरियाय गेल ना[5]
भूषण वसन लोटाय[6] गेल ना[7]

रोय रोय कजरा दहाय गेल ना[8]
आदंकहि[9] सिंदुर मेटाय गेल[10] ना
नन्दीपति कवि भाव[11] ना[12]
देख सहल[13] सुख पाओल ना[14]
(दुख सहिय सुख पाब ना)

मिथिला देवी, उसमा मठ, दरभंगा

---

[७] i मि० गी० स० (भाग–३, गीत–३०)क पाठान्तर :—
२. चहु दिश । ४. जैसे शशि कापें वा 'शखि यस काँपथि' । ९. अदंकहि । ११. भान ।

ii मै० लो० गी० (पृ० २४४)क पाठान्तर :—
१. चललिह पहु घर ना । २. हँसि हँसि । ६. मलिन । ९. अदंकहि । १२. 'भानु नाथ' कवि धीर धरु ना ।

iii ग्रियर्सन (गीत संख्या–२६)क पाठान्तर :—
१. चलिलहु पहु घर ना । २. चहु दिस । ३. जाइतहु लागु परम । ५. जाइतहि हार टुटिए गेल ना । ६. मलिन । ८. रोए रोए काजर बहाए देल ना । ९. अवकहिँ । १०, देल । १२. भनइ विद्यापति गाओल ना । १३. दुख सहि सहि ।

विशेष :—नगेन्द्र नाथ गुप्त अपन विद्यापति पदावलीमे पद संख्या १४७ रूपमे संकलित कय लेलनि, विमानविहारी मजुमदार एहि पदकेँ मिथिलामे प्राप्त सन्दिग्ध पदक रूपमे पद संख्या ८९६ मे संकलित कयलनि, तथा नन्दीपतिक गीत होयबाक सन्देह कयलनि ।

iv दाइजी, खोजपुरक पाठान्तर :—
२. चौदिस सखि । ३. प्रेम । १०. मलिन भेल । ५. छुबितहि हार टुटिए गेल ना । ७. छुबितहि वसन हेरा गेल ना । १२. 'बुद्धिनाथ' कवि गाओल ना । १४. दुख छाड़ि सुख पाओल ना ।

विशेष :—चारिम पंक्तिक बाद सातम–आठम पक्ति छैक । गीतक पोथीमे 'बुद्धि नाथ' भणिता छलैक किन्तु गयबा कालमे 'बुद्धिलाल' नाम भणितामे छलैक ।

Scanned by CamScanner

१०

तिरहुति

माधव ई नहि उचित विचारे
जकर एहन धनि काम कला सनि से किए कर व्यभिचारे
प्राणहु ताहि अधिक छलि ये धनि हृदइक हार समाने
को परि आन कओन विधि ताकिय कि कहब तनिक गेआने
पढ़ल पुरुख भय मुरुष भेलाह तोहें सहजहि ई अरविन्दा
से सिनुआरि कुसुम तेजि सेविय सहजहि भम्हर मलिन्दा (?)
कृपण काँ केअओ ने भल कह इ अछि जग उपहासे
निय धन अछैत से नहि भोगथि केवल परहिक आशे
नन्दीपति भनिय रसिक जन की फल अधिक जनाइ
माङि आनिय वित्त तें जँ होय नित अपन करिय कथिलाइ

प्राचीन हस्तलेख सँ

---

[१०] प्रस्तुत पद विद्यापतिक नाम पर पूर्ण प्रचलित अछि। ग्रियर्सन, नगेन्द्रनाथगुप्त तथा बिमानविहारीमजुमदार विद्यापतिक प्रामाणिक पद मानने छथि, किन्तु हमरा ई नन्दीपतिक भणितामे एक प्राचीन तिरहुता हस्तलेखमे उपर्युक्त रूपमे उपलब्ध भेल। ई हस्तलेख सम्प्रति प्रोफेसर डाक्टर शैलेन्द्रमोहनझा, मैथिली-विभाग, सी०एम्०कालेज, दरभंगाक लगमे सुरक्षित छनि। नीचाँ ग्रियर्सनक पाठ दऽ रहल छी जाहिमे अन्य भिन्न पाठक संग पाँचम-छठम पंक्तिक अभाव छक।

माधव ई नहि उचित विचारे
जनिक एहन धनि कामकला सनि से किअ करु व्यभिचारे
प्रानहु ताहि अधिक कय मानब हृदयक हार समाने
कोन परियुक्ति आन कैं ताकब की थिक हुनक गेआने
कृपिन पुरुस कैं केओ नहि निक कह जगभरि कर उपहासे
निज धन अछइति नहि उपभोगब केवल परहिक आसे
भनहिं विद्यापति सुनु मधुरा पति इ थिक अनुचित काजे
माँगि लायब वित से यदि होय नित अपन करब कोन काजे

ग्रियर्सन,—५१, नगेन्द्रनाथगुप्त —३७७

वि०वि०मजुमदार—३८०

Scanned by CamScanner

तिरहुति

माधव एहन दिवस भेल मोरा[1]
अपन करम[2] फल हम उप भोगब[3] ताहि[4] दोष कोन[5] तोरा
जाहि नगर चानन हनि चोन्हथि[6] अड़ड़[7] आदर कए रोपे[8]
'बिनु गुन[9] बुझले जनिक[10] अनादर[11] उचित न तापर कोपे
सगुन पुरुख निरगुन नीनल जौं जीवन जड़ कें देला
जौं करमी फुल सबहु सराहिए तौं कि कमल गुन भेला
थल गुन आन ठाम परगोसल तैं की तनिक अभेला
गिरिदरि ताहि तिमिर रहु तापर रबि महिमा हिन भेला
जनिक सरसमन ताहि कहिए गुन पसु सिसु अबुध न बूझे
नन्दीपति भन तैं देखु दरपन आन्हर काँ की सूझे

T. V. H, I.V.

---

[११] मै० लो० गो० (पृ० २५६) ओ मि०गी०सं० (भाग-१, गीत-२३) क पाठान्तर

१. माधव की कहब कुदिवस मोरा। २. कर्म ३. उपभोगल ४. जाहि ५. नहि ६. चीन्है ७. अड़र ८. कै रोपै, ९. गुण १०. तनिक ११. तापर उचित न कोपै।

चारि पंक्तिक बाद मै० लो० गी० मे शेष पंक्ति निम्न रूपमे अछि :—

पढ़ल पुरुष यदि नयन गमाओल तैं नहि करिय अभेला।
जौं करमी फुल कौन सराहल तैं की कमल गुन गेला॥
सुजन पुरुष निरगुन जग निन्दल जड़के गौरव बूझै।
नन्दीपति इहो मन दय बूझिय आन्हरकें की दरपन सूझै॥

चारि पंक्तिक बाद मि० गी० सं० मे छैक

पढ़ल पुरुष थल दुख दुइ प्रकाश गमाओल तैं नहि करिय अभेला
जौं करमी फुल कौन सराहल तैं की कमल गुन भेला
सुजन पुरुष निरगुन जग निन्दल जड़कें जीवन देल
गिरिवर ताहि त्रिवेणी बहु तापर रवि महिमा किए भेल
जनिका कनक परस होय सुशील पशु शिशु अबूझ की बूझै
'नन्दीपति' इहो मन दय बूझिय आन्हरकें की दरपन सूझै

Scanned by CamScanner

१२

बटगवनी

चन्द्र वदनि नवि[1] कामिनि सजनी[2] यामिनि अति अन्हियारि
सखि सङ्ग चललि केलिघर[3] सजनी कर-पल्लव[4] दिप[5] वारि
पवन झिकोर[6] जोर बह सजनी तेँ लेल अञ्चल झाँपि
देखि उरज अति उन्नत[8] सजनी दीप[9] रासि उठ काँपि
झप झप कए कत काँपए सजनी विलखि धुनए निज माथ[10]
कथि लए जनम देल मोर[11] सजनी चतुरानन विनु[12] हाथ
नन्दीपति कवि गाओल सजनी ई जग थीक कुमान[13]
परस उरज अति सुन्दर सजनी 'माधव सिंह' रस जान

मै० गी० र०, पृ० ४४, गीत—७५

---

[१२] पाठान्तर :—

मि०गी०सं०(भाग-३, गीत ३७) ओ मै०लो०(पृ० २७३) :—१. नव, २. सजनी गे, ३, गृह, ४. पंकज, ५. दीप, ६. झकोर, ७. धरू, ८. सुन्दर (उपर्युक्त पाठ मै० लो० सं०), मै० गी० र०–सुन्दर ९. (मै० गी० र०–तेँ ओ) १०. धप धप करत झुकत फेर सजनी गे, भाल धुन शिर माथ, ११. दैव जनम देल, १२. विन, १३. अन्तिम उभय पंक्तिक अभाव छैक ।

टिप्पणी :—_तारादेवी गोनौन, दरभंगा_ सँ प्राप्त गीतमे अन्तिम दुनू पंक्ति छैक जाहिमे माधवसिंहक उल्लेख अछि । किन्तु हमरा सन्देह अछि जे ई गीत रत्नावली-एक अनुकृतिने होअय । गीत रत्नावलीमे ई भनिता कतऽसँ उपलब्ध भेलनि तकर कोनो संकेत कविशेखर जी नहि देने छथि ।

१३

बटगवनी

माङग[1] चोह चिकुर भर[2] सजनी सहजहिँ दूबरि देह
प्रथमहि सुपहु[3] समागम सजनी उपजल[4] अधिक सन्देह[5]
दूरहि[6] सुतलि विमुखभए सजनी विरल बसने[7] मुख झाँपि
अभिनव केलिक नामहि[8] सजनी नहि नहि, कए उठु[9] काँपि
नूपुर काढ़ि नराओल[10] सजनी हरल वसन अवशेष[11]
भाव भरल नव[12] नागर सजनी उनमत भेल विशेष[13]
नयन नोर[14] भरि बाजलि सजनी भल[15] शपथ[16]क निरवाह
पुरुष न जान नारि दुख[17] सजनी केवल निज[18] सुख चाह
आलस अलक बेयाकुल सजनी न रहलि निजवश नारि[19]
अति कौशल पहु परसल[20] सजनी एहि अवसर अवधारि[21]
धैरज धए रहु सुवदनि ! सजनी इएह उचित एहि ठाम[22]
नन्दीपति विनु साहस सजनी सुखद न होअ परिणाम

मै० गी०र०, पृ० ४३, गी०–७४

[१३] T. V. H., VI क पाठान्तर :—
३. पहु सँ ५. सोह ६. दुरसँ ७. वसन ९. उठि ११. अवसेखि १३. अति उनमत भेल देखि
१६. सपथक १७. नागर न बुझ नारि दुख १८. निअ १९. दुहु पंक्तिक अभाव छैक।
विशेष :—अन्तिम पुष्पिका निम्न लिखित रूपमे छैक —

नन्दीपति कवि गाओल सजनी यैह उचित एहि ठाम।
साहस तह पुनु लहु थिक सजनी सुखद होयत परि नाम ॥

मि० गी० सं० (भाग-१, गीत १६) क पाठान्तर ;
१. भागहि २. भेल ३. पहुक ४. बाढ़ल ६. दुरिभय ७. विरह वसन ८. नामे ९. उठि
१०. नेराओल १३. भेल १४. नीर १६. सपथ अपन १२. छल १३. अति उन्मति 'त्त'[1] भेल
देष १९. दुहू पंक्तिक अभाव छैक।
२१. अन्तिम दुहू पंक्तिक स्थानमे विद्यापतिक भनिता युक्त निम्न दुइ पंक्ति छैक।

भनहि विद्यापति गाओल स० क्यो जनु नेह लगाव।
भाव एकर हम की कहब स० जे सुन से दुख पाव ॥

विशेष :—पाँचम ओ छठम पंक्ति मि० गी० सं० मे सातम-आठम केर बाद छैक।
मन्तव्य– मै० गी० र० केर उपर्युक्त पाठमे–२०. 'पसरल सँ[1] 'परसल' संशोधित पाठ।

Scanned by CamScanner

१४

बटगवनी

की कहु पहु परदेश गेल सजनी गे
की कहु किछु ने सोहाय
फूजल केश नीर बहु सजनी गे
काजर गेल दहाय
चूड़ी बसन भार भेल सजनी गे
भेल यौवन अति भार
आङन मोरा लेखे विजुवन सजनी गे
घर भेल दिवस अन्हार
हरि बिनु सेज सून भेल सजनी गे
गेरुआ मोहि ने सोहाय
जौं नहि प्रीतम अओताह सजनी गे
मरब जहर विष खाय
नन्दीपति भन मन दय सजनी गे
मन जनु करिय उदास
तकर कतेक अभिलाखन सजनी गे
देलन्हि बहु विश्वास

मि० गी० सं०, भाग-४, गीत-५

[१४] *विशेष :—* H.M.L. Vol I.P. 418, f n. 56 [c] मे कहल गेल अछि जे ई गीत हुनक नाटको मे छनि, किन्तु नाटक पे ई गीत छैक नहि।

i. म० लो० गी० मे कतिपय पंक्तिक साम्य युक्त गीत छैक :—

एते दिन भँवरा हमर छल सजनी गे
आब गेल मोरंग देश
मधुपुर पिअहु लोभायल सजनी गे
मोरा किछु कहियो ने गेल

आगन लागए विषम सन सजनी गे
घर भेल विषम अन्हार
फूजल केश अभेम भेल सजनी गे
गेरुआ मोरो ने सोहाय
आजु पिया नहि आवत सजनी गे
मरब जहर विष खाय

पृ० २८५-८६, बटगबनी गीतसं०-२१

ii. वरक उदासीक एक गीतसँ साम्य छैक--

जाहि दिन पिया परदेस गेल सजनी गे
ताहि दिन किछु ने सोहैल
आङन मोरा लेखें विजूवन सजनी गे
घर लागे दिवस अन्हार
सूतक सेज अगिन सन सजनी गे
गेरुआ मोहि ने सोहाय
खूजल केश निर भेल सजनी गे
नयन काजर गेल दहाय
पुरुख वचन निफल भेल सजनी गे
सपतक ने परमान

—गाइनि
१. कृपाल दाइ २. कुसुम सुन्नरि
ग्राम सहोड़ा, पो० आनन्दपुर, दरभंगा।

iii. एकटा आरो गीत सँ तुलनीय अछि—

एते दिन भमरा हमर छल गे सजनी
आइ गेल सारङ देस
मधु पिबि भमरा लोभित भेल सजनी गे
मोहि किछु कहिओ ने गेल
सिन्दुर विन्दुल मोहि ने सोहाय
पहु विनु सुन भेल लाली पलङिया
गेरुआ मोहि न सोहाय
पुरुखक जाति अपन नहि सजनी गे
मरब जहर विख खाय

—गाइनि
उतिम सुन्नरि (सँभा)
ग्राम सहोड़ा, पो० आनन्दपुर, दरभंगा।

Scanned by CamScanner

१५

ग्वालरी

चलली[1] मधुपुर[2] साजि रे दधि बेचन बाला
यमुना निकट तट जाय रे रोकय[3] नन्दलाला।
मुख अंचर[4] पट ओत[5] रे रभसि हँसु भामा[6]
पुलकि[7] पुरल तनु देह[8] रे देखि सुन्दर श्यामा
मुरली अधर विराज रे सुन्दर सुख[9] रासी
मन मोरा[10] हरल गोपाल रे गोकुल के[11] बासी
जाय देवन्हि[12] उपराग रे यशोदा[13] महारानी
तोर पुत[14] हटलो ने[15] मान रे लूटय गालवि(?)रानी[16]
नन्दीपति भन नेह[17] रे सुनु गोप गोआरी[18]
तोहि छाड़ि भजहि ने आन रे[19] नोखे गिरधारी

दाइजी, खोजपुर, दरभंगा

---

[१५] मै० गी० र० क पाठान्तर, गीत संख्या -८०

१. चललि २. मधुपुर ३. रोकल ४. अन्चल ५. ओट ६. दए विहुँसलि वामा ७. पुलक ८. तन नेह ९. मुख १०. मोर ११. केर १२. जाए देब १३. यशोमति १४. 'तोर पुत' क स्थानमे 'हरि' १५. नहि १६. लुट माल बिरानी १७. गौरीपति कवि भान रे १८. कुमारि १९. सब तेजि भजिअ मुरारि रे।

विशेष :— छठम पंक्तिक बाद दुइ पंक्ति आरो छैक—

करब कओन परकार रे सोचए ब्रजबाला।
पड़ल कुञ्ज वन साँझ रे वैरी भेल काला।।

भणिता मे 'गौरीपति' छैक।

Scanned by CamScanner

१६

ग्वालरी

जसुमति सुत[1] मुरारी ना
सखि हे लेलन्हि जमुना घटवारी ना
चलली दहि[2] दुध बेचय[3] ना
सखि हे संग दोसर नहि थिक ना
कत कत कयल निहोर ना
सखि हे नहि बुझ परम कठोर ना
आयल[4] जमुन[5] जल वाढ़ी ना
सखि हे भेलहु कदम तर ठाढ़ी ना
बाट भेटिअ[6] गेल कान्ह ना
सखि हे ओही वृन्दावन माझ ना
नन्दीपति कवि भान ना
सखि हे नन्द तनय रस जान ना[8]

स्व० महेश्वर ठाकुर,
भीठ भगवानपुर, दरभंगा

---

[१६] मि० गी० सं० [चतुर्थ भाग, पृ० ६, गीत–७] क पाठान्तर :—
१. यशोमति सुन २. दधी ३. वेचन ४ अयलो ५. जमुना ६. भेटिय ७. भनहिं विद्यापति ८. एही प्रकारक वाक्यांशक हेतु देखू कृ०के०मा० पृ० १९., २८, ३०, ३९, ४०

Scanned by CamScanner

१७

अम्बर धैल[1] उतारी
से लै[2] कदम[3] चढ़ल मुरारी
अभरन[4] एक वरु लैह[5]
हरि परिधार[6] वसन मोर दैह[7]
सवहिं[8] सखी घर जाये[9]
हम किये एतेखन विलमाये[10]
हमहि[11] बुझिय[12] तोर भावे
से मन वासी[13] करह हरि आवे[14]
मोरा[15] मुख अवइत[16] आगी
नेह करह हरि अतवे री लागी[17]
नन्दीपति कवि गावे[18]
नन्द तनय रस बूझू आवे[19]

मि० गी० सं० (भाग-४, गीत-१२)

---

[१७] कृष्ण केलिमाला (तृतीय अंक, पृ० ३८)क पाठान्तर

१. धएल २. लए ३. कदमतरु ४. अभरण ५. लैह ६. परिधान ७. देहे ८. सबहुँ ९. पट पाऊँ १०. हमरहि किए एतिखन विलमाऊ ११. हमहुँ १२. बुझिए १३. वासि १४. आबे १५. मुझ १६. अबइछ १७. तोहउँ करह हरि तन(त) वहि लागी १८. गाबे १९. रसमय बुझ भावे ।

विशेष : —नवम-दसम पंक्ति सातम-आठम सँ पूर्वे छैक। छठम पंक्तिक बाद निम्न लिखित चारिपंक्ति आओरो छैक—

एति कौतुक किए तोही
कारण कओन कहह दुहु मोही
कीए तोहेँ पारह गारी
हमेँ न तोहर हरि सरहोज सारी

अन्य पाठान्तर

३. कदमहि ६. परिहन (पहिरन) १३. वासि १५ मोर १६. आबय १७. एतबए लागी।

Scanned by CamScanner

१८

मान

[१]आब उचित नहि मान[२] ॥ध्रु०॥

एखनुक रीति[३] हम जेहन[४] देखै[५] छी[६] जागल पै[७] पचबान[८]
कुसुमा[९] रचित सेज दीपक[१०] देखि थिर नहि रहय[११] गेआन[१२]
तखनुक धैरज धरय न पारि (र) अ[१३] सुनि सुनि पिक निक गान
जूड़ि[१४] रैनि[१५] चकमक[१६] कर[१७] चानिनि[१८] एहन समय नहि आन
एहन समय[१९] पहु मिलन जेहन थिक[२०] जकरहि हो[२१] से जान
त्रिवलि तरङ्ग शिता शित[२२] संगम उरज[२३] शम्भु[२४] निरमान[२५]
आरति पहु[२६] प्रतिग्रह[२७] मङ्गइछ[२८] करू घनि सर्ब्बस दान[२९]
कुसुम कुसुम कत विलसि विलासिनि[३०] अलि मालति करू मधुपान[३१]
अपन अपन पहु सवहु[३२] जेमाओल भूषल तोर मेजमान[३३]
हम कि कहब सखि तोहें कमलमुखि अपनहि करु समधान[३४]
सञ्चित मदन वेदन अति[३५] दारुण[३६] नन्दीपति[३७] कवि भान

कृष्णकेलि माला तृतीय अङ्क पृ० ६३

---

[१८] मि० गी० सं० क पाठान्तर

२. गे रमणी (अधिक छैक) ३. ऋतु ४. एहन ५. देखैत ९. कुसुम १०. दीप दीपक ११. रहत १५. रइनि १६. ई शब्द नहि छैक १७. करू १८. चानन १९. एहि अवसर २०. सुख २१. जकरे होइ २३. उर २५. निर्म्मान २६. रति २८. मङै छी २९. कर धनि सर्वसु दान ३१. हरषि हरषि अलि विलसि विलसि धनि करह अधर मधुपान ३२. सबहि ३३. जमाओल भूखल तुअ यजमान ३५. तन ।

विशेष :—चारिम ओ एगारहम पंक्तिक अभाव छैक । तेसर पंक्ति मि० गी० सं० मे दसम पंक्तिक बाद छैक ।

ग्रियर्सन क पाठान्तर :—

१. मानिनि (प्रारम्भ होइत छैक) ३-६. रंग एहन सन लगइछ ७. पय ८. पचोवान ११-१२. दीप दिपक देखि थिर न रहय मन, दृढ़ करु अपन गेआन १४. जुड़ि १५ रमनि

Scanned by CamScanner

१८. चानन १९. एहि अवसर २०. सुख २१. होए २२.,सितासित २४. सम्भु २६. पति २७. परतिग्रह २८. मगइछ २९. सरवस दान ३१. रभसि रभसि अलि विलसि-विलसि करे जेकर अधर मधुपान ३३. जेमाओलि भूखल तुअ जजमान ३७ विद्यापति ।

विशेष :—एहूमे मि० गी० सं० जकां चारिम ओ एगारहम पंक्तिक अभाव छैक । पाँचम-छठम पंक्तिक बाद नवम-दसम पंक्ति देल गेल छैक । तेसर पंक्ति आठम पंक्तिक बाद अयलैक अछि । भणितामे विद्यापतिक नाम छनि । ग्रियर्सनक पद संख्या-५० केर अनुसरण करैत नगेन्द्र नाथ गुप्त पद संख्या ४१२ मे तथा विमान बिहारी मजुमदार पद संख्या ४८२ मे निस्संकोच भावें विद्यापतिक पद मानि लेलनि । मि० गी० सं० भाग–१, गीत सं० ५९, पृ० ४० मे स्पष्टत: 'नन्दीपति' भणिता अछि । ई गीत उपर्युक्त रूपमे 'नन्दीपति' भणिता सँ युक्त, हुनक कृष्णकेलि माला नाटकक तृतीय अंक (पृ० ६३) मे राधिकाक मान तोड़बाक हेतु सखि विशालाक्षीसँ गबाओल गेल अछि । अत: निस्सन्देह ई गीत विद्यापतिक नहि, नन्दीपतिक थिकनि ।

पाठ शुद्धि : —

१०. छन्दानुरोधें 'दीपक' क बाद दुइ मात्रा अपेक्षित तें 'दिप' वा 'सिख' देल जा सकैछ १३. 'पाविअ' कें 'पारिअ' सेहो पढ़ल जा सकैछ २२. सितासित ३०. 'विलासिनि' कें छन्दानुरोधें 'विलसि' कऽ देल जाय वा 'अलि' कें हटा देल जाय ।

Scanned by CamScanner

१९

तिरहुति

[1]कओने अवगुन[2] पहु[3] तेजलन्हि हमरा[4]
पर रे रमनि रस लुबुधल ममरा[5]
निज करु निन्द परस निन्द गेल[6]
निन्दक[7] भरम भेल पहुक[8] सन्देह[9]
ओहि[10] अवसर हम उठलहुँ जागी[11]
हरि हरि कहैत[12] परम दुख भागी[13]
पिया पिया करैत[14] पयोधर भारी[15]
कतेक[16] दिन नयन बहत[17] जलधारी[18]
ककरि[19] रमनि थिकहुँ कहु गे ताही[20]
देखलहुँ[21] तोर[22] धनि विरह[23] बताही
कवि वादरि ई थिकनि सन्देह[24]
जतेक[25] विरह होन्हि ततेक सनेह[26]

दाइजी, खोजपुर, दरभंगा

[१९] कृ० के० मा० (अंक-३ पृ० ६९) क पाठान्तर :—

१. की जनि २. दोखे ३. (नहि छैक) ४. मोरा ५. भम्हरा ६. निजकर परसि…… (खण्डित) ७. निनक ८. पिआक ९. सन्देहा १०.. तेहि ११. उठिलहुँ जागि १२. भेलहुँ १३. भागि १४. हेरि हेरि पीन १५. भारे १६. कत १७. तेजब नयन १८. धारे १९. जकर २०. रमणि हम कहिहह ताही २१. देखलि २२. तोहर २३. विकल २४. नन्दीपति कह तखनुक नेहा २५. येहन २६. हो तेहन सिनेहा ।

विशेष :—आठ पंक्तिक बाद चारि पंक्ति आओर छैक :—

उपवन उपगत दक्षिन समीरे
किदहु होएत पुर परसि शरीरे
मन छल सुपहु होएत सुख दाता
नव परिचय नव विरह विधाता

Scanned by CamScanner

२०

जसोमति[1] मोर उपरागे । हरिक चरित[2] मोहि[3] बड़ मन्द लागे
जाइत जमुना पथ आजे । बन सँ[4] बाहर मेल जुबराजे[5]
आँचर धएलन्हि[6] मोरा । काल्हुक जनमल तोहर किशोरा[7]
तखनुक तसु व्यवहारे[8] । आब कि[9] कहब हम अपन कपारे[10]
कोर सुतल तोर कान्हे । तैँ जनु बूझह[11] हरि छथि नान्हे.
एतय[12] करथि तन[13] पाने । ओतय कटै छथि तरुनक[14] काने
नन्दीपति कवि गाई[15] । जननि, जसोमति[16] नहि पति आई

T. V. H. VI

---

[२०] कृ० के० मा० (पृ० २६) क पाठान्तर :—

१. यशोमति २. चरित्र ३. माइ ४. बन सौं ५. यदुराजे ६. धयलन्हि ७. तोर किशोरा ८. वेवहारे ९. सेकी ११. जानह १२. एतहु १३. थन १४. तरुणक १५. कहहु सखी गण मन लाई १६. यशोमति

टिप्पणी :—प्रस्तुत सातम-आठम युग्मक पाँती एहिमे पहिल युग्मक पाँतीक बाद छैक। अन्तिम पाँतीसँ पूर्व एक युग्मक पंक्ति और छैक :—

पूछह सखी सेआनी, नहि परमान होइत मोर वानी ।।

अन्तमे भनिता युक्त युग्मक पंक्ति छैक :—

नन्दीपति कवि अवधारी, कृष्ण चरित्र सम छकित गोआरी ।।

मैथिली पद्य संग्रह (पृ० ३५-३६) क पाठान्तर :—

३. माइ ४. वनसञो ५. यदुराजे ७. तोर किसोरा ८. वेवहारे १०. कपाड़ ११. जानह १२ एतए १३. थन १४. तरुनक १५. कह को विद मन लाई ।

टिप्पणी —कृष्णकेलि माला जकाँ एहूमे सातम आठम युग्मक पाँती पहिल युग्मक पंक्तिक बाद छैक। अन्तिम युग्मक पंक्तिसँ पहिने एहूमे युग्मक पंक्ति छैक —

पूछह सकलखि आनी । तेहि परमान होइत मोर वानी ।।

भनितामे 'कोविद' छैक। कृष्णकेलि माला जकाँ अतिरिक्त पंक्ति नहि छैक।

Scanned by CamScanner

२१

हरि हे अति आकुल मन मोरा
कतेक सहब दुख कौतुक तोरा
एहि जमुना जल कतहु न थाहे
लए ग्रिमहार पार लए जाहे
चहुदिस घन बुन्द बरिसए मेहा
अब कि करब सखि जिबहु सन्देहा
झाँझरि नाब टुटल करुआरे
कोन परि उतरब एहो भब पारे
सब सखि मिलि बैसलि हिया हारी
बिनु पुरुख पथ न चढ़िए नारी
नन्दीपति जल बीचि अपार
डगमग नैया करु माँझहि धार

T. V. H. V. II



---

[२१] कृ॰ के॰ मा॰ (पृ॰ ४५) क पाठान्तर :—

दुनूमे ततेक अन्तर छैक जे सौंसे गीते उद्धृत कऽ देब उचित होयत ।

हरि हे अति आकुल मन मोरा ०
कतेक सहब हमें कैतुक तोरा ॥
फूटलि नाओ टूटल करुआरे ०
कोने परि हमे धनि उतरब पारे
एहि जमुना जल कतहु न थाहे ०
देव गृमहार पार लए जाहे ॥
बने बुन्द वारिश , दशहु दिशि मेहा ०
आबे अधिक भेल जीव सन्देहा ॥
शबहु सखी मिलि हलु हिआ हारी ०
विनु रे पुरुख पथ जनु चहु नारी ॥
नन्दीपति कञोन उपाइ ०
डगमग नाओ करइ अछि माई ॥

परिशिष्ट

[स्व० धरेश्वरझा, लालगंज, दरभंगाक गीतक पोथीसँ प्राप्त नन्दीपतिक राजनामाङ्कित दुइ गोट पद]

१

रसमय समय वसन्त * कि करब लग नहि कन्त ॥
अति आकुल मन मोर * नयन ढरकि पर नोर ॥
निरदय दय दुख गेल * मन भरि मिलियो ने भेल ॥
एत दिन छल मोहि लाज * विरहेँ वेकत भेल आज ॥
परम करम मोर मन्द * विष भेल चानन चन्द ॥
एहि तह अधिक न सोग * पहिलहि वयस वियोग ॥
नन्दीपति कवि गाव * विष्णुसिंह बुझु भाव ॥

●

२

एक हम नागरि वैसेँ सजनी गे दोसर पिया परदेश ॥
मोर मन विकल दहोदिस सजनी गे केओ नहि कहय उदेस ॥
अहो निस पहु पथ हेरि हेरि सजनी गे चौदिस लागु अन्धार ॥
विरह वेदन तन पसरल सजनी गे नयन बहय जलधार ॥
कोकिल मोर सोर सुनि सजनी गे मन मन करिअ विचार ॥
पाओस सकल निराएल सजनी गे सरद कयल उपचार ॥
चान किरण सोँ निकसल सजनी गे मारु मदन समधानि ॥
नागर नेह तेजल किए सजनी गे पाब पराभव पानि ॥
नन्दीपति भन सुनु जग सजनी गे पड़ि(?) भय करि अनुमान ॥
एहि सोँ भूप दोअर नहि सजनी गे माधवसिंह समान ॥

●

[स्व० दिनकरदत्तमिश्रे प्रसिद्ध महीमिश्र, नवटोल, दरभंगाक गीतक पोथीसँ प्राप्त 'बादरि कृष्ण'क भनिताक दुइ पद]

३

मत्त गजवर मधुर दामिनि सबहु सखि मिलि चललि कामिनि
केलि कौतुक देखि शुभ घड़ि हरषि मुखि भय रे
साजि कए कत सखी निकसलि लाज कए पहु पास बैसलि
तखन अद्भुत देखल बाला कुसुम माला रे
रक्त चानन यवाजाता(ला?) हृदय हारक फूल माला
तिराफुल मधुरीक डाला बकुल फुलकत रे
अर्घ सुरसरि नीर ढारल आनि चौमुख दीप बारल
धूप दय नैवेद्य साँठल[1] ....
....
कमल नव करबीर ओरहुल फूल बकहुल रे
बादरि कृष्ण विचारि गाओल गौरि गणपति पूजि पाओल
जेहन मन छल तेहन भेटल दुःख मेटल रे

●

४

साजि सकल शृंगार माला गौरि पूजय चललि बाला
प्रिय सखी सभ सङ्ग लय कत रङ्ग करयित रे
साजि चानन फूल डाला ताहि ऊपर सिन्दूर माला
अगर गुग्गुल धूप दय कत दीप चौमुख रे
दक्षिण चिर लय मण्डप झारल ताहि ऊपर कलश राखल
(बेढ़ल) वन्दनवार पाँती भाँति भाँतिक रे
कतहु वीणा वेणु गाजय कतहु झालि मृदङ्ग बाजय
कतहु किन्नर गीत गाबय भाव लाबय रे
बादरि कृष्ण बिचारि गाओल गौरि गणपति पूजि पाओल
जेहन मन छल तेहन पाओल दुःख मेटल रे[2]

●

---

१. आधा पंक्ति ओ अग्रिम एक पंक्ति अपेक्षित बूझि पड़ैछ।
२. किञ्चित पाठान्तरक संग यैह गीत 'हिन्दी साहित्य और बिहार' (द्वितीय खण्ड) पृ० २४८ पर 'बदरी विष्णु'क भनितामे अछि।

Scanned by CamScanner

ग्रन्थ सूची

क्र. सं.	पोथीक नाम	लेखक वा संपादकक नाम	प्रकाशक	संक्षिप्त संकेत
१.	कृष्ण केलिमाला १९६१	नन्दीपति सं. डा. जयकान्त मिश्र	अ. भा. मैथिली साहित्य समिति, तीरभुक्ति, इलाहाबाद–२	कृ. के. मा.
२.	मिथिला गीत संग्रह	सं. भोलझा	कन्हैयालाल कृष्णदास श्रीरमेश्वर प्रेस, दरभंगा	मि. गी. सं.
३.	मैथिली गीत रत्नावली सं. २००६	सं. श्रीबदरीनाथझा	ग्रन्थालय, दरभंगा	मै. गी. र.
४.	मैथिली पद्य संग्रह १९४१	सं. श्रीरमानाथझा	मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगा	
५.	मैथिल भक्त प्रकाश १९१२	बाबूललितेश्वरसिंह	कन्हैयालाल कृष्णदास श्रीरमेश्वर प्रेस, दरभंगा	
६.	मैथिली लोक गीत २०१२	रामइकबालसिंह'राकेश'	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग	मे. लो. गी.
७.	विद्यापति—२०१० (हिन्दी रूपान्तर)	खगेन्द्रनाथमित्र विमानबिहारीमजुमदार		मि० म०
८.	विद्यापतिर शिवगीत	सुधीरचन्द्रमजुमदार	कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता	

९. हस्तलेख

१०. हाथक लिखल गीतक अनेकानेक महिलाक पोथी

पत्र-पत्रिका

११.	आर्यावर्त (परिशिष्टाङ्क, २८-१२-६०)	हिन्दी दैनिक पटना
१२.	श्रीमैथिली, १९२५	मैथली मासिक सं. उदितनारायणदास लहेरियासराय, दरभंगा